ISSN:

वर्तमान संचार परिदृश्य में भारतीय श्रुति परम्परा के नव स्वरूप का आलोचनात्मक अध्ययन

पृथ्वी सेंगर,

सहायक प्रोफेसर,

स्कूल ऑफ मीडिया, फिल्म एण्ड टेलीविजन स्टडीज,

आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

तान्या श्रीवास्तव

परास्नातक विद्यार्थी,

स्कूल ऑफ मीडिया, फिल्म एण्ड टेलीविजन स्टडीज,

आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

विशाल शर्मा

सहायक प्रोफेसर,

स्कूल ऑफ मीडिया, फिल्म एण्ड टेलीविजन स्टडीज,

आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

सारांशः

भारतीय ज्ञान परम्परा में श्रुतियों का अत्यधिक महत्व है। श्रुति परम्परा वेदों से स्मृतियों तक प्रवाहित होती आई है। अलिखित संचार प्रणाली में श्रुति परम्परा अग्रदूत की भूमिका में अत्यधिक विस्तार और सुक्ष्म अस्तित्व रखती है। श्रुति परम्परागत संचार की प्रक्रिया अंर्तवैयक्तिक या लघु समुह संचार है। इसमें एक व्यक्ति और एक या अधिक श्रोता होते हैं। व्यक्ति के शब्दों को केवल सुनना, कंठस्थ करना, स्मरण करना और फिर उसे अन्य व्यक्तियों को सुनाना श्रुति परम्परा है । यह व्यक्तिगत से लेकर जनसंचार की ओर विकसित संजाल है। यह श्रुति परम्परागत संचार हमें गीत–संगीत, कहानी–किस्सों और श्रव्य–दृश्य माध्यमों के रूप में आज भी देखने को मिलता है। श्रुति परम्परा अभिव्यक्ति का सबसे पहला माध्यम है और ज्ञान संचय और संचारण का भी यह सबसे पहला माध्यम है। प्रस्तुत शोध में भारतीय ज्ञान की संवाहक रहीं श्रुतियों के इन्हीं नव स्वरूपों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही प्रभाव पर भी विस्तृत विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत व्याख्यात्मक शोध में वर्तमान डिजिटल समय मे भी श्रुति परम्परा के महत्व, उपयोगिता और प्रभावशीलता देखने को मिली है।

हमारा अध्ययन इस प्राचीन ज्ञान के विस्तार, व्याख्या और संरक्षण पर डिजिटल प्रारूप के प्रभाव पर केंद्रित है। इस डिजिटल प्रवासन द्वारा प्रस्तुत अवसरों और चुनौतियों दोनों का विश्लेषण करके, हमारा लक्ष्य वर्तमान संचार परिदृश्य में श्रुति परंपरा के विकसित परिदृश्य पर प्रकाश डालना है।

कुंजी शब्दः

श्रुति परम्परा, संचार, जनमानस, प्रभाव, जनसंचार

परिचय–

श्रुति का शाब्दिक अर्थ है 'वह जो सुना जाता है' और हिंदू धर्म में दैवीय रूप से प्रकट माने जाने वाले प्राचीन भजनों और ग्रंथों के विशाल संग्रह को संदर्भित करता है। ये ग्रंथ श्रुति परंपरा की नींव हैं। वेदों, उपनिषदों और ब्राह्मणों सहित ये ग्रंथ, धार्मिक ज्ञान और अभ्यास की नींव के रूप में कार्य करते हुए, अत्यधिक अधिकार

रखते हैं। परंपरागत रूप से, श्रुति ज्ञान का प्रसारण एक कठोर मौखिक वंश (गुरु–शिष्य परंपरा) के माध्यम से होता है जो याद रखने और पढ़ने पर जोर देता है। परंपरागत रूप से, श्रुति ज्ञान को मौखिक वंश (गुरु–शिष्य परंपरा) के माध्यम से पारित किया जाता था, जिसमें एक शिक्षक द्वारा एक छात्र को याद करने और सुनाने पर जोर दिया जाता था (गौतम, 2013)।

डिजिटल मीडिया और संचार प्रौद्योगिकियों के आगमन ने सूचना प्रसार में क्रांति ला दी है। यह परिवर्तन श्रुति परंपरा को चुनौतियों और अवसरों दोनों के साथ प्रस्तुत करता है। प्रसारण के नए रास्ते उभरे हैं, जिनमें पॉडकास्ट, सोशल मीडिया प्लेटफार्म, मोबाइल एप्लिकेशन और ऑनलाइन पाठ्यक्रम शामिल हैं। यह शोध पत्र श्रुति परंपरा के लिए इन विकासों के महत्वपूर्ण निहितार्थों की पड़ताल करता है।

डिजिटल श्रुति का उदय–

डिजिटल क्षेत्र श्रुति परंपरा की पहुंच का विस्तार करने के लिए अभूतपूर्व क्षमता प्रदान करता है। ऑनलाइन प्लेटफार्म भौगोलिक सीमाओं को पार कर सकते हैं, जिससे भौगोलिक रूप से फैले हुए दर्शकों को श्रुति सामग्री तक पहुंचने और जुड़ने में सक्षम बनाया जा सकता है। पॉडकास्ट विद्वानों के व्याख्यान और प्रवचनों का प्रसार करता है, जबकि सोशल मीडिया रिकार्डिंग, व्याख्याओं और चर्चाओं को साझा करने के लिए एक स्थान प्रदान करता है। मोबाइल एप्लिकेशन इंटरेक्टिव शिक्षण अनुभव प्रदान करते हैं, और आनलाइन पाठ्यक्रम सूक्ष्म ज्ञान चाहने वालों के लिए सीखने के अवसर प्रदान करते हैं।

प्लेटफार्मः

डिजिटल मीडिया के उदय ने श्रुति परम्परा को नये रूप में विभिन्न मंच पेश किए हैं। इसमें शामिल हैः

- पॉडकास्ट में व्याख्यान शामिल हैं।
- रिकॉर्डिंग, व्याख्याएं और चर्चाएं साझा करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्म।
- मोबाइल एप्लिकेशन इंटेक्टिव शिक्षण अनुभव प्रदान करते हैं।
- सीखने के अवसर प्रदान करने वाले ऑनलाइन पाठ्यक्रम।

डिजिटल श्रुति पारंपरिक भारतीय श्रुति परंपरा को प्रसारित करने, एक्सेस करने और उससे जुड़ने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग को संदर्भित करती है।

अभिगम्यता (एक्सेसीबिलिटी)–

अत्याधिक विस्तारः डिजिटल श्रुति भौगोलिक और लौकिक बाधाओं को दूर करती है। रिकॉर्डिंग को इंटरनेट कनेक्शन के साथ कहीं से भी एक्सेस किया जा सकता है, जिससे ये पवित्र ग्रंथ अधिक व्यापक दर्शकों के लिए उपलब्ध हो जाते हैं।

सुविधा और लचीलापनः शिक्षार्थी अपनी गति और सुविधा से श्रुति सामग्री तक पहुंच सकते हैं, जिससे व्यक्तिगत सीखने की यात्रा की अनुमति मिलती है।

बहुभाषी संसाधनः डिजिटल प्लेटफॉर्म विभिन्न भाषाओं में श्रुति के अनुवाद और व्याख्या की पेशकश कर सकते हैं, जिससे गैर–संस्कृत बोलने वालों के लिए समावेशिता को बढ़ावा मिलेगा।

ज्ञान का लोकतंत्रीकरणः डिजिटल श्रुति श्रुति शिक्षाओं के इर्द–गिर्द विविध व्याख्याओं और चर्चाओं की अनुमति देती है। यह समृद्ध हो सकता है, आलोचनात्मक सोच और पाठ के साथ जुड़ाव को बढ़ावा दे सकता है।

डिजिटल युग में संरक्षण एवं संवर्धन–

डिजिटल उपकरण श्रुति परंपरा को संरक्षित करने के लिए मूल्यवान संसाधन प्रदान करते हैं। पाठ और प्रवचनों की रिकॉर्डिंग को ऑनलाइन संग्रहीत किया जा सकता है, जिससे इस पवित्र ज्ञान का एक स्थायी भंडार बन जाएगा। इसके अतिरिक्त, युवा पीढ़ी के बीच श्रुति के अध्ययन और समझ को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाइन ट्यूटोरियल और इंटरेक्टिव लर्निंग मॉड्यूल जैसे शैक्षिक संसाधन बनाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग किया जा सकता है।

डिजिटल युग श्रुति परंपरा के संरक्षण और प्रचार–प्रसार के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करता है। यहां प्रमुख पहलुओं का विवरण दिया गया हैः

संरक्षणः

डिजिटल संग्रहः पाठ, प्रवचन और व्याख्यान की रिकॉर्डिंग को ऑनलाइन संग्रहीत किया जा सकता है, जिससे श्रुति ज्ञान का एक स्थायी और सुलभ भंडार तैयार हो सकता है। यह परंपरा को भौतिक रिकॉर्ड के साथ होने वाली हानि या क्षति से बचाता है।

डिजिटल संस्करण और टिप्पणियाँः डिजिटल एनोटेशन और टिप्पणियों के साथ श्रुति ग्रंथों के विद्वतापूर्ण संस्करण बनाए जा सकते हैं, जिससे अनुसंधान और गहरी समझ में आसानी होगी।

मानकीकरण और मेटाडेटाः मानकीकृत डिजिटल प्रारूप और व्यापक मेटाडेटा श्रुति सामग्री की दीर्घकालिक पहुंच और खोज क्षमता सुनिश्चित कर सकते हैं।

उन्नतिः

इंटरएक्टिव लर्निंग मॉड्यूलः ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के लिए आकर्षक और इंटरैक्टिव लर्निंग मॉड्यूल विकसित किए जा सकते हैं, जिससे श्रुति का अध्ययन युवा पीढ़ी के लिए अधिक सुलभ और आकर्षक हो जाएगा।

शैक्षिक संसाधनः डिजिटल टूल का उपयोग ऑनलाइन ट्यूटोरियल, वृत्तचित्र और मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों जैसे शैक्षिक संसाधन बनाने के लिए किया जा सकता है जो व्यापक दर्शकों के लिए श्रुति अवधारणाओं को पेश करते हैं।

बहुभाषी आउटरीचः श्रुति ग्रंथों और शैक्षिक सामग्रियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद परंपरा की व्यापक समझ और सराहना को बढ़ावा दे सकता है।

डिजिटल श्रुति का प्रभाव–

डिजिटल श्रुति ग्रंथों को व्यापक दर्शकों के लिए उपलब्ध कराकर अधिक प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देती है। उपयोगकर्ता समय और स्थान की सीमाओं को पार करते हुए, अपनी सुविधानुसार रिकॉर्डिंग का उपयोग कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, श्रुति सामग्री को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का लाभ उठाया जा सकता है, जिससे इसकी पहुंच और बढ़ जाती है।

डिजिटल प्रारूप कुछ चिंताएँ भी पैदा करता है। परंपरागत रूप से, गुरु ने श्रुति की समझ का मार्गदर्शन करने, इसके गूढ़ अर्थ के संरक्षण को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डिजिटल क्षेत्र में, शिक्षक–छात्र के सीधे संबंध का अभाव एक चुनौती प्रस्तुत करता है। ऑनलाइन संचार की अवैयक्तिक प्रकृति श्रुति के भीतर अंतर्निहित गहन संदेशों की गलत व्याख्या या तुच्छीकरण का कारण बन सकती है। विभिन्न चरणों पर प्रभाव परिलक्षित होते हैं–

पहुंचः डिजिटल श्रुति भौगोलिक और समय सीमाओं को पार करते हुए, इन पवित्र ग्रंथों को व्यापक दर्शकों के लिए अधिक सुलभ बनाती है। उपयोगकर्ता अपनी सुविधानुसार रिकॉर्डिंग तक पहुंच सकते हैं।

व्याख्याः डिजिटल क्षेत्र में व्याख्याओं को लेकर अनेक चिंताएं उभरती हैं। परंपरागत रूप से, गुरु का मार्गदर्शन महत्वपूर्ण था जो ऑरलाइन मंचों पर उपलाब्ध नहीं है। ऑनलाइन संचार की अवैयक्तिक प्रकृति व्याख्याओं के अनेक अर्थों को जन्म दे सकती है। इससे भ्रांतियां और फेक न्यूज का प्रचलन देखने को मिलता है।

संरक्षणः डिजिटल उपकरण व्याख्याओ की रिकॉर्डिंग को संरक्षित करने, इस ज्ञान का एक स्थायी भंडार बनाने के लिए मूल्यवान संसाधन प्रदान करते हैं। हम कभी भी कुछ भी सुन सकते हैं और बोल सकते है इससे तथ्यों को याद रहना असान है।

प्रमोशनः विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए शैक्षिक संसाधनों, ट्यूटोरियल और इंटरैक्टिव लर्निंग मॉड्यूल के माध्यम से श्रुति को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग किया जा सकता है।

चुनौतियाँ–

श्रुति का डिजिटल प्रसार भी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। ज्ञान के व्यावसायीकरण के संबंध में चिंताएं हैं, कुछ प्लेटफॉर्म संभावित रूप से श्रुति सामग्री को मात्र मनोरंजन मानते हैं। इसके अलावा, ऑनलाइन दुनिया में गलत सूचना या गलत व्याख्याएं फैल सकती हैं। डिजिटल क्षेत्र में श्रुति सामग्री की प्रामाणिकता और सम्मानजनक प्रस्तुति सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। चुनौतियों के प्रति सचेत रहते हुए डिजिटल उपकरणों की शक्ति का उपयोग करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि श्रुति परंपरा फलती–फूलती रहे, नए दर्शकों तक पहुंचे और डिजिटल युग में भावी पीढ़ियों को प्रेरित करे।

डिजिटल संसाधनोंः डिजिटल सामग्री के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए निरंतर रखरखाव और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। डिजिटल श्रुति संसाधनों की दीर्घायु और पहुंच सुनिश्चित करने की रणनीतियाँ महत्वपूर्ण हैं।

डिजिटल विभाजनः प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक असमान पहुंच डिजिटल संरक्षण और प्रचार प्रयासों की पहुंच को सीमित कर सकती है। समावेशिता के लिए प्रयास करना चाहिए और वंचित समुदायों तक पहुंचने के लिए वैकल्पिक तरीकों पर विचार भी करना चाहिए।

कॉपीराइटः जिम्मेदार प्रसार सुनिश्चित करने के लिए कॉपीराइट मुद्दों और कुछ श्रुति सामग्री का ऑनलाइन उपयोग करने के लिए अनुमति प्राप्त करने की आवश्यकता है। इसे सम्बंधित कानुनों को भी सरल बनाने होगें।

सहयोगः श्रुति के डिजिटल संरक्षण और प्रचार के लिए प्रभावी रणनीति विकसित करने के लिए विद्वानों, संस्थानों और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों के बीच सहयोग आवश्यक है।

सामुदायिक जुड़ावः डिजिटल संरक्षण और प्रचार प्रक्रिया में श्रुति समुदायों को सक्रिय रूप से शामिल करने से यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि परियोजना उनके मूल्यों और जरूरतों के अनुरूप है की नहीं।

नैतिकताः डिजिटल क्षेत्र में श्रुति सामग्री की सम्मानजनक प्रस्तुति महत्वपूर्ण है। प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए परंपरा के पवित्र चरित्र को बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

वस्तुकरणः श्रुति सामग्री को महज मनोरंजन मानने का जोखिम है, जिससे संभावित रूप से इसके पवित्र चरित्र को कमजोर किया जा सकता है।

गलत सूचनाः ऑनलाइन दुनिया की अत्याधिक विस्तार और स्तोत्र के अनजाने होने के कारण गलत सूचना फैल सकती है या श्रुति शिक्षाओं की गलत व्याख्या हो सकती है।

प्रामाणिकताः डिजिटल क्षेत्र में श्रुति सामग्री की प्रामाणिकता और सम्मानजनक प्रस्तुति सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

चुनौतियों को कम करने की रणनीतियाँ–

क्यूरेटेड सामग्री और प्रतिष्ठित स्रोतः प्लेटफॉर्म योग्य विद्वानों और स्थापित वंशावली वाले संस्थानों की सामग्री को प्राथमिकता दे सकते हैं।

इंटरएक्टिव विशेषताएंः एनोटेशन, शब्दावली और चर्चा मंच जैसे इंटरैक्टिव तत्वों का समावेश गहरी समझ को सुविधाजनक बना सकता है।

संदर्भ पर जोरः श्रुति ग्रंथों के आसपास के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ की स्पष्ट व्याख्या प्रदान करने से उपयोगकर्ताओं को गलत व्याख्याओं से बचने में मदद मिल सकती है।

मॉडरेशन और तथ्य–जांचः मजबूत मॉडरेशन प्रथाओं को लागू करने से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर गलत सूचना के प्रसार को रोकने में मदद मिल सकती है।

निष्कर्ष–

डिजिटल संचार परिदृश्य श्रुति परंपरा को फलने–फूलने और नए दर्शकों तक पहुंचने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करता है। जबकि व्याख्या और ऑनलाइन शिष्टाचार के संबंध में चुनौतियाँ मौजूद हैं, व्यापक पहुंच और संरक्षण के नवीन तरीकों के संभावित लाभ महत्वपूर्ण हैं। डिजिटल युग में श्रुति ज्ञान के जिम्मेदार और प्रभावी प्रसार के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को विकसित करने के लिए और अधिक शोध आवश्यक है। परंपरा के मूल मूल्यों को बनाए रखते हुए नई प्रौद्योगिकियों की शक्ति का उपयोग करके, श्रुति आने वाली पीढ़ियों के लिए आध्यात्मिक साधकों को प्रेरित और मार्गदर्शन करना जारी रख सकती है।

अग्रगामी अनुसंधान

यह अध्ययन इस उभरती हुई घटना के आगे के अन्वेषण के लिए आधार तैयार करता है। भविष्य के अनुसंधान मार्गों में शामिल हैं:

• श्रुति सामग्री की मेजबानी करने वाले विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्मों द्वारा अपनाई गई सामग्री और संचार रणनीतियों का गहन विश्लेषण।

• डिजिटल मीडिया के माध्यम से श्रुति का सामना करने वाले व्यक्तियों की प्रेरणाओं और अनुभवों को समझने के लिए उपयोगकर्ता अध्ययन।

• श्रुति ज्ञान के ऑनलाइन प्रसारण के लिए नैतिक दिशानिर्देशों का विकास।

श्रुति परंपरा के नए रूपों की आलोचनात्मक जांच करके, हम समकालीन दुनिया में इसकी निरंतर प्रासंगिकता और महत्व सुनिश्चित कर सकते हैं।

संदर्भ–

1. *Gautam, Col. (2013). Shruti and Smriti: Some Issues in the Re-emergence of Indian Traditional Knowledge . Https://Www.Files.Ethz.Ch.*
2. *Al-Quran, M. W. M. (2022). Traditional media versus social media: challenges and opportunities. Technium. https://doi.org/10.47577/technium.v4i10.8012*
3. *Mukhopadhyay, A. & Chakraborty, Soumen & Choudhury, Monojit & Lahiri, A. & Dey, Soumyajit & Anupam, Basu. (2006). Shruti: An embedded text-to-speech system for Indian languages. Software, IEE Proceedings -. 153. 75- 79. 10.1049/ip-sen:20045031.*
4. *Alzubi, Ahmad. (2022). Impact of New Digital Media on Conventional Media and Visual Communication in Jordan. Journal of Engineering, Technology, and Applied Science. 4. 105-113. 10.36079/lamintang.jetas-0403.383.*
5. *Banerjee, Shourini. (2024). Digital Media Platform for the Sub Altern Digital Journalism and Subaltern Spaces. 10.1007/978-981-99-6675-2_40.*
6. *Konstantinova, Roumiana. (2024). TRADITIONAL VS DIGITAL MEDIA USE AND TRUST IN EU COUNTRIES. 10.17501/29506530.2023.3102.*
7. *Gioltzidou, Georgia & Mitka, Dimitra & Gioltzidou, Fotini & Chrysafis, Theodoros & Mylona, Ifigeneia & Amanatidis, Dimitrios. (2024). Adapting Traditional Media to the Social Media Culture: A Case Study of Greece. Journalism and Media. 5. 10.3390/journalmedia5020032.*
8. *Wei, Haotian. (2024). Exploring the Influence and Potential of New Media on Traditional Cultural Communication. SHS Web of Conferences. 185. 10.1051/shsconf/202418502016.*
9. *Yuan, Lihong & Razi, Siti Aishah & Mahamed, Mastura & Kasimon, Diyana. (2024). The Roles of Social Media and Traditional News Media in Promoting Government Responsiveness in Social Incidents. Studies in Media and Communication. 12. 344. 10.11114/smc.v12i1.6536.*
10. *Lv, Ling. (2023). Reproduction and Interpretation of Traditional Cultural Elements in Digital Media Teaching and Learning. BCP Education & Psychology. 11. 79-84. 10.54691/n2m1sp95.*

2. *Zheng, Adrian & He, Fangzhou & Xiong, Tianchen & Bian, Jiahe. (2023). The Rise of New Media: A Benefit or a Threat to Traditional Media-Based Society?. Lecture Notes in Education Psychology and Public Media. 4. 1061-1066. 10.54254/2753-7048/4/2022790.*